नवसाक्षर साहित्यमाला

लाला पटेल की 'लायबरी'

रमणलाल व. देसाई

रूपांतरण

सुषमा मेढ़

चित्र

संतोष गुप्ता

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

सोपान स्मारक निधि के अनुदान से यह पुस्तक तैयार की गयी है।

ISBN 81-237-1756-3

पहला संस्करण : 1999
तीसरी आवृत्ति : 2000 (शक 1922)

Lala Patel Ki 'Layabari' (*Hindi*)
रु. 7.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क
नयी दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

लाला पटेल का गांव

बहुत साल पहले की बात है। भारत में अंग्रेजों का राज था। चारों तरफ आजादी के नारे गूंज रहे थे। गांव गांव में गांधी जी का संदेश पहुंच रहा था।

गांव का जीवन बदल रहा था। लाला पटेल का गांव गुजरात में था। गांव में बिजली आ गयी थी। नयी सड़कें बन रहीं थीं। किसान खेतों में नये बीज बो रहे थे। नयी खाद डाल रहे थे।

गांव में सरकारी दफ्तर खुल गया था। दफ्तर का सारा काम पढ़-लिख कर होता था। गांव के बहुत कम लोग पढ़े-लिखे थे। गांव में एक पाठशाला भी थी। स्कूल भी खुल गया था। छोटे बच्चे और कुछ बड़े लड़के पढ़ने जाते थे। बहुत कम लड़कियां पढ़ने जातीं थीं। ज्यादातर बड़े-बूढ़े अनपढ़ थे। बड़ी-बूढ़ी औरतों को भी पढ़ना-लिखना नहीं आता था। घर और खेत के काम से उन्हें फुर्सत नहीं मिलती थी। लड़कियां घर के काम में हाथ बंटाती थीं।

लाला पटेल गांव के बुजुर्ग थे। सब उनकी सलाह लेते।

वे गांव के मुखिया भी रहे थे। लेकिन अब ये काम उन्होंने छोड़ दिया था। पहले गांव में कई काम आपसी बातचीत से हो जाते थे। मुखिया और पंच मिलकर लोगों की बातें सुनते। चौपाल पर चर्चा होती और बात तय हो जाती।

लाला पटेल अनपढ़ थे। वे सरकारी फरमान पढ़ नहीं पाते थे। सरकारी अफसर शहर से आते। गांव के लोगों पर अंग्रेजी में रौब जमाते। अनपढ़ होने का ताना देते। एक दिन लाला पटेल ने सोचा, "सरकारी बाबू कुर्सी पर बैठकर लाटसाहबी करते हैं। हमें गंवार समझते हैं। खेती करना क्या आसान है? उसमें भी सूझ-बूझ चाहिये। किसान खेत तैयार करता है। धान उगाता है। पशुओं की देखभाल करता है। और यह सरकारी साहब? अपने को पंडित समझता है।... मेरे पास जमीन है। मैं खेती करूंगा। इस उम्र में मुझसे लिखना-पढ़ना नहीं होगा।

यह सोचकर भी लाला खेती करने लगे। गांव में नया



मुखिया भी था। लेकिन लोगों को लाला पटेल पर भरोसा था। उनकी सलाह के बिना गांव में कोई काम नहीं होता था।

पिछले कुछ दिनों से गांव में बड़ी चहल-पहल थी। आज चौपाल पर लोग जमा थे। सरकारी फरमान आया था। गांव में 'लायबरी' – पुस्तकालय बनेगा। लोग सोच में पड़ गये। लाला पटेल से सलाह लेनी होगी। लोगों ने साहब से कहा, "साहब जी, आप सभा बुलाइए। लाला पटेल को भी उसमें बुलाइए। सभा में चर्चा होगी। फिर बाकी बात तय होगी।" साहब लोगों की बात मान गये। लाला पटेल को बुलाने एक आदमी भेजा गया।

लाला पटेल की सलाह

लाला पटेल खेत से लौटे थे। इतने में एक आदमी भागा हुआ आया और लाला जी से बोला, "लाला जी, जल्दी चलिए। आपको साहब बुला रहे हैं।" लाला पटेल ने पूछा, "क्यों बुला रहे हैं भाई ?... तेरा साहब कान में कलम खोंसकर हुकुम चलाता है। क्या हल-वल भी चलाना जानता है ?"

आदमी हंसकर बोला, "अरे लाला जी, हल ही चलाना होता तो वह पढ़-लिख कर साहब क्यों बनता ?"

इतने में मुखिया भी बुलाने आ गया। लाला पटेल जाना नहीं चाहते थे। वे अनपढ़ थे। साहब के सामने उन्हें झिझक होती थी। शहरी अफसरों की बातें उन्हें अच्छी नहीं लगती थी। उन्होंने मुखिया से कहा, "रोज नया साहब आता है। एक कहता है 'कोपटीव सोसाटी' खोलो। दूसरा कहता है 'बिलायती हल चलाओ'। हर रोज नये कागज और फरमान बांटता है। दफ्तर में तख्ते पर सूचना लिखवाता है। कहता है, 'सूचना पढ़ो और काम करो'। भाई, मैं तो परेशान हो गया हूं। गांव में सरकारी हवा मुझे अच्छी नहीं लगती।"

मुखिया ने 'लायबरी' के फरमान के बारे में बताया । वह बोला, "लोग आपकी सलाह लेना चाहते हैं । सभा बुलाई गयी है । आपका आना जरूरी है, लाला काका ।"

लाला पटेल सभा में गये । लेकिन उनके मन में चिंता थी । गांव के लोग किसान थे । लड़के-लड़कियां खेती में मदद करते थे । मां-बाप से कई हुनर सीखते थे । बड़ों का आदर करते थे । लाला जी को डर था । 'लायबरी' खुलेगी तो लड़के खेती छोड़ देंगे । लड़कियां घर के काम में ध्यान नहीं देंगी । नौजवान लड़के-लड़कियां 'लायबरी' में बैठेंगे । किताबें पढ़ेंगे । पोथी-पंडित बन जायेंगे । अपनी मन-मानी करेंगे । माता-पिता को गंवार समझेंगे ।"

लाला यह सोच ही रहे थे कि चौपाल पर चर्चा शुरू हुई । गांव के लोग 'लायबरी' बनवाना चाहते थे । गांव के नौजवान भी चाहते थे कि गांव में लायबरी खुले । लाला पटेल ने सभी लोगों की बात सुनी । वे साहब से बोले, "बाबू साहब, गांव वालों की यही इच्छा है । 'लायबरी' के लिए मैं भी राजी हूं ।"

साहब के चेहरे पर खुशी थी । लोग भी खुश थे कि लाला जी राजी हो गये । बात तय हो गयी । 'लायबरी' बनेगी । सरकारी साहब ने 'लायबरी' के कागज पर पंचों के दस्तखत लिये । किसी ने अंगूठा लगाया । किसी ने अपना नाम लिखा ।

गांव में 'लायबरी' बनाने की तैयारी शुरू हो गयी ।



गांव में 'लायबरी' बन गयी

गांव के एक मकान में 'लायबरी' बनी। अंग्रेजी नाम था — 'लायब्रेरी' यानी ग्रंथालय। लोगों ने इसे बना दिया -'लायबरी'।

मुखिया ने लोगों को 'लायबरी' के बारे में बताया 'लायबरी' में किताबें रखी जायेंगी। अखबार रखे जायेंगे। लोग यहां आकर पढ़ सकते हैं। ग्रंथालय के अफसर को 'ग्रंथपाल' कहते हैं।"...

लेकिन लोगों के लिए ये नाम कठिन था। उन्होंने अपने ही नाम बना लिए। 'ग्रंथालय' के लिए 'लायबरी' और 'ग्रंथपाल' के लिए 'किताब बाबू'।

गांव की 'लायबरी' के 'किताब बाबू' शहर से आये थे। उनका नाम था — केशव भाई। कुछ दिनों में लायबरी तैयार हो गयी। उसके दरवाजे पर लिखा था — 'पुस्तकालय'। एक बड़े कमरे में रैक और अलमारियां रखी थीं। उनमें किताबें सजाकर रखी गयी थीं। हर किताब पर नंबर लगा था। सरकारी मोहर भी लगी थी। एक बड़ी मेज पर अखबार रखे थे। बैठने के लिए बैंच थे। किताब बाबू के

लिए एक कोने में कुर्सी-मेज थीं।

कमरे की दीवारों पर तस्वीरें और नक्शे टंगे थे। एक नक्शा विश्व का था। दूसरा भारत का। लायबरी के आगे छोटा-सा बगीचा था। गांव का एक आदमी रात को लायबरी की रखवाली करता था।

केशव भाई का घर 'लायबरी' के पास था। आते-जाते लोगों से उनकी पहचान हो गयी। वे लोगों को लायबरी के बारे में बताते। बड़े-बुजुर्ग से कहते, "आप भी आइये। जो नहीं पढ़ सकता उसे मैं पढ़कर सुनाऊंगा। आपको खबरों का पता चलेगा।"

केशव भाई की बातें सुनकर बड़े-बूढ़े भी 'लायबरी' आने लगे। लाला पटेल से भी केशव भाई की दोस्ती हो गयी। कभी कभी लाला भी आने लगे।

'लायबरी' सबके मिलने की जगह बन गयी। लोग एक-दूसरे को समाचार सुनाते। कोई पढ़ता, कोई सुनता। गपशप और चर्चा भी होती। जो अनपढ़ थे उन्हें तस्वीरें देखने में मजा आने लगा। कुछ लोग पढ़ने की कोशिश करते। केशव भाई ऐसे लोगों को पढ़ना-लिखना सिखाने लगे।

बड़े-बूढ़े इस उम्र में सीखते सीखते एक दूसरे का खूब मजाक उड़ाते। लाला पटेल भी इस पढ़ने-पढ़ाने और सीखने के खेल में शामिल हो गये।

‘लायबरी’ की चहल-पहल

हर दिन ‘लायबरी’ पांच बजे बंद होती। किताब बाबू आवाज लगाते, “समय हो गया। अब ‘लायबरी’ बंद होगी। किताबें रख दीजिये।”... लोगों की आवाजें आतीं, “बस, जरा सी देर और, केशव भाई। इतना खतम कर लूं।” कोई कहता, “गांधी बापू के बारे में रामू काका को पढ़कर सुना रहा हूं। अभी पूरा हो जायेगा, केशव भाई।”

लोग इसी तरह रोज आने लगे। पढ़ते, सुनते, चर्चा करते। लाला पटेल भी रोज आने लगे। कुछ लोग अपने साथ स्लेट-कलम लाने लगे।

आज लाला जी को देर हो गयी। हांफते हुए भागे भागे आये। एक लड़के ने पूछा, “आज आपको देर कैसे हो गयी, काका ?” लाला बोले, “अरे हरिया। आज मेरा बैल भड़क गया था। उसने मुझे खूब दौड़ाया। बड़ी मुश्किल से काबू में आया। इसी दौड़-भाग में देर हो गयी।... अच्छा, बता तो, आज की क्या खबर है ?”

‘लायबरी’ के एक हिस्से में कुछ लड़के बातें कर रहे थे —“लाला काका तो ‘लायबरी’ के खिलाफ थे। अब देखो,



रोज आते हैं । केशव भाई से पढ़ना-लिखना सीखते हैं ।" एक लड़के ने लाला जी को छेड़ा और बोला, "काका, आप तो कहते थे लौटा दो सरकारी फरमान । हमें 'लायबरी' नहीं चाहिये । लड़के बिगड़ जायेंगे । और अब आप ही इसके गुणगान करते हो ।..."

लड़के की बात सुनकर लाला हंस पड़े । वे बोले, "अरे भाई, मैं केशव भाई के कहने पर आता हूं । चबूतरे पर बैठकर बीड़ी पीने से तो अच्छा ही है । केशव भाई से दीन-दुनिया की गपशप भी सुन लेता हूं ।"

केशव भाई लाला जी की बातें सुन रहे थे । वे हंसकर बोले, "मैं गप नहीं कहता पटेल भाई । अखबार में लिखी घटनाएं आपको बताता हूं । आप पढ़ना सीख जाइए । खुद पढ़ेंगे तो मेरी बात गप नहीं लगेगी ।" यह सुनकर सब हंस पड़े । कुछ गंभीर होकर लाला बोले, "किताब बाबू, इस उम्र में क्या पढ़ना-लिखना ? आप सिखाते हैं, तो इस बूढ़े का थोड़ा समय कट जाता है ।"

यह सुनकर केशव भाई बोले, "पढ़ने-लिखने की कोई उम्र नहीं होती लाला जी । ध्यान लगाकर सीखिए । कुछ ही दिनों में आप अखबार पढ़ लेंगे । अपना नाम तो लिख ही लेते हैं ।" लाला पटेल लगन से सीखने लगे । उन्हें देख बड़े-बूढ़े भी सीखने लगे । केशव भाई ने सिखाने के लिए एक काला तख्ता भी टंगवा दिया। वे उस पर अक्षर लिखते । सीखने वालों के नाम लिखते । लोगों को तख्ते

पर लिखे शब्द पढ़ने-पहचानने में मजा आने लगा।

एक दिन केशव भाई किसी नेता का भाषण पढ़कर सुना रहे थे। लाला पटेल ने उन्हें रोका और बोले, "भाषण रहने दो, बाबू। हमें तो गांधीजी की सीधी-सरल बातें पढ़कर सुनाओ।"

एक लड़के ने लाला जी की बात सुनी और बोला, "पटेल काका, बापू तो जेल में हैं। उनका नाम लेने में खतरा है। अंग्रेज सरकार को पता चल जायेगा तो हमें जेल जाना पड़ेगा।" इस पर लाला चकित होकर बोले, "इसमें खतरा कैसा? बापू सच ही कहते हैं—'मेहनत करो। अपना कपड़ा खुद बुनो। ऊंच-नीच का भेद-भाव मिटाओ। शराब छोड़ो।'...इसमें बुराई क्या है? फिर सरकार ने उन्हें बंदी क्यों बनाया है?"

दूसरा लड़का बोला, "पटेल काका, बापू आजादी की मांग कर रहे हैं। वे अंग्रेजों से कहते हैं, "तुम विदेशी हो। वापस जाओ। यह देश हमारा है। हम स्वराज लेकर रहेंगे।" यह सुनकर लाला पटेल बोले, "ठीक ही तो कहते हैं। हम गुलाम नहीं रहेंगे। भाई।... ठीक से पढ़कर सुनाओ। आजादी के आंदोलन के और क्या समाचार हैं?"

लाला जी की बात सुनकर केशव भाई बोले, "अब तो आप पढ़ लेते हैं, लाला। आज आप पढ़िये, हम सब सुनेंगे।"

लाला पटेल ने पढ़ने की कोशिश की। वे अटक अटक

कर पढ़ रहे थे। बच्चों की तरह। उन्हें सुनकर सब को हंसी आ गयी। लाला भी हंस पड़े। कुछ बड़े-बूढ़ों ने भी पढ़ने की कोशिश की। अपनी अपनी गलतियों पर सब हंसे। उन्हें सुनकर बच्चे और नौजवान भी हंस पड़े।

‘लायबरी’ का संदेश

पढ़ने वालों की संख्या बढ़ने लगी । औरतें भी ‘लायबरी’ में आने लगीं । ‘लायबरी’ के एक हिस्से में बच्चों की पुस्तकें रखी थीं । बच्चे चाव से आने लगे । उन्हें छोड़ने कभी मां आती, कभी बहन । वे भी केशव भाई से कहतीं, “हम भी लिखना-पढ़ना सीखेंगे केशव भाई । हमें भी अखबार पढ़ना है ।”

केशव भाई का काम बढ़ गया । वे गांव के लोगों को साक्षर बनाना चाहते थे । ‘लायबरी’ का यही संदेश था । वे लड़के-लड़कियों से सरल पुस्तकें पढ़वाते । दूसरों से कहते, “सुनिए,समझिए और सीखिए ।” ‘लायबरी’ में चर्चाएं होने लगीं । सब अपनी अपनी बात कहते । कभी खेती के नये तरीकों पर बात होती । कभी रेलगाड़ी पर । केशव भाई दूसरे देशों के बारे में बतलाते । अखबार में छपी सिनेमा की तस्वीरें दिखाते । उस पर बातें भी करते ।

किताबों की मांग बढ़ने लगी । बच्चे फरमाईश करते । कोई परियों की किताब मांगता । कोई अकबर-बीरबल की । कोई तस्वीर वाली पुस्तक मांगता । कोई कहता, “यह



किताब मुश्किल है, केशव भाई। कोई आसान किताब दीजिए न।"

एक दिन एक बढ़ई 'लायबरी' में आया। लकड़ी काटने की बिजली की नयी मशीन के बारे में उसने सुना था। उसके बारे में उसने केशव भाई से किताब मांगी। केशव भाई ने किताब निकालकर दी और बोले, "यहीं बैठकर इसे देखो। इसमें तस्वीरों से समझाया है। तुम भी यहां आया करो। पढ़ना-लिखना सीखो। लकड़ी की अच्छी अच्छी चीजें बनाने की जानकारी मिलेगी। ढंग से नापना-काटना आ जायेगा।" बढ़ई को केशव भाई की बात बहुत सही लगी। उसने तय किया कि वह 'लायबरी' जरूर आयेगा।

इस तरह केशव भाई सबकी मांगें पूरी करते। सबका उत्साह बढ़ाते। देखते देखते 'लायबरी' को दो साल हो गये। गांव के लोगों ने कहा, "हम उत्सव मनायेंगे।" केशव भाई ने नाटक की एक किताब कुछ लड़कों को दी और बोले, "इसे पढ़ो और नाटक मंच पर खेलो। रामू, तुम एकलव्य बनोगे। खूब शैतानी करते हो। सबकी नकल करते हो। तुम नाटक में अच्छा काम कर सकते हो।"

बस, फिर क्या था। रामू ने अपने दोस्तों को इकट्ठा किया। नाटक की तैयारी शुरू हो गयी। उत्सव के दिन नाटक मंच पर खेला गया। गांव के लोगों ने देखा और खुशियां मनायीं।

समय बदला, लाला पटेल भी बदले

लाला पटेल का डर गलत निकला। 'लायबरी' ने लोगों में नयी जान डाल दी। सबके चेहरे पर उमंग थी। लड़के-लड़कियां पहले की तरह खेत में काम करते। स्कूल जाते। समय निकाल कर 'लायबरी' भी आते। आजादी का संदेश उनके दिल में था।

लाला अपने जीवन के बारे में सोचने लगे। जब वे छोटे थे, तब गांव में बिजली नहीं थी। समय तेजी से बदल रहा था। जीवन भी बदल रहा था।

....लाला जी की पत्नी का देहांत हो चुका था। आज उन्हें अपनी पत्नी की याद आ गयी। गांव की औरत की तरह वह भी आज नये नये काम सीखती...। लाला पटेल की एक बेटी थी। पाठशाला में चार साल तक पढ़ी थी।

एक दिन लालाजी बेटी से बोले, "पार्वती बेटा, मेरे मन में एक बात आयी है। केशव भाई बता रहे थे — बहुत सारी बहनें भी लिखना-पढ़ना सीखना चाहती हैं। दिन में उन्हें फुर्सत नहीं मिलती। 'लायबरी' शाम को बंद हो जाती है। अपने घर में हम रात्रिशाला खोलेंगे। गांव के कुछ



पढ़े-लिखे लोग और लड़के पढ़ाने को राजी हैं। तेरी क्या राय है, बेटी ?"

पार्वती को यह बात बहुत अच्छी लगी। आस-पड़ोस में वह सबको बता आयी। रात्रिशाला खुल गयी। केशव भाई की खुशी का ठिकाना न था। गांव की महिलाओं के लिए पढ़ने-लिखने की सुविधा हो गयी। लाला पटेल के घर में रौनक़ छा गयी।

गांव का रंग बदल गया। लोग बच्चों को स्कूल भेजने लगे। कतली-चरखे पर सूत कातने लगे। खेतों-खलिहानों में आजादी की बातें होतीं। 'लायबरी' में हर कौम के लोग आते। लाला पटेल, रुस्तम भाई, मरियम चाची सभी आते। साथ मिल-बैठकर समाचार पढ़ते। देश-दुनिया की चर्चा करते। सब साथ मिलकर आजादी के सपने देखते!

गांव का मुखिया भी बहुत खुश था। एक दिन वह लाला पटेल से मिलने आया और बोला, "लाला जी, इस बार

दिवाली के बाद तालाब खोदना है । गांव में पानी की कमी है । इस साल यह काम पूरा करना है । आपको याद है न ? लोगों को तैयार करना होगा ।”

यह सुनकर लाला बोले, “लो, मुखिया होकर मुझे कहते हो ! सबको इकट्ठा करना होगा । सूचना देनी होगी । गांव का हर एक आदमी और औरत, छोटा-बड़ा सभी हिस्सा लेंगे । एक एक कुदाली सब मारेंगे । तालाब तैयार हो जायेगा । मुखिया जी, तुम ‘लायबरी’ में जाकर सबको बता दो । तख्ते पर लिखवा दो । मैं भी रात्रिशाला में सबको बता दूंगा ।”

इस तरह गांव की समस्याएं हल होने लगीं । सब कुछ शांति से चल रहा था ।

अचानक एक दिन. . . .

अचानक एक दिन एक नयी बात हुई। केशव भाई बहुत उदास थे। उनके चेहरे पर गहरी चिंता थी। आज वे चुप चुप थे। लाला पटेल को शक हो गया। कोई बात जरूर है ! उन्होंने केशव भाई से पूछा, "क्या बात है केशव भाई ? किस चिंता में हो ?"

केशव भाई ने जवाब दिया, "आज मन बहुत भारी है लाला। आपकी 'लायबरी' मुझे छोड़नी होगी। इस गांव से मुझे जाना होगा।" लाला चौंक पड़े और बोले, "यह कैसे हो सकता है ? क्या आप हमसे नाराज होकर जा रहे हैं ?"

केशव भाई बोले, "नहीं नहीं पटेल भाई। ऐसी बात नहीं है। सरकार का हुकुम आया है। मुझे नौकरी से छुट्टी दी गयी है।" लाला को बहुत अचरज हुआ। उन्होंने केशव भाई से इस हुकुम का कारण पूछा। केशव भाई ने बताया, "हमारे गांव के कुछ लड़के पकड़े गये हैं। वे आजादी की लड़ाई में शामिल हो गये थे। सरकार को मुझ पर शक है। पुलिस कहती है कि लड़कों को मैंने भड़काया है। मैं सरकार के खिलाफ हूं. . . ।"

लाला पटेल चिंता में पड़ गये । उन्हें बहुत दुख हुआ । वे बोले, "मैं पुलिस से बात करूंगा, केशव भाई । उन्हें समझाऊंगा । गांव के लोग आपको जाने नहीं देंगे ।"

यह सुनकर किताब बाबू बोले, "अब कुछ नहीं हो सकता पटेल काका । आजकल जिस पर शक होता है उसे जेल में बंद कर देते हैं । मुझे सिर्फ नौकरी से निकाला है । जेल भी भेज सकते हैं ।" इस पर लाला पटेल बोले, " नहीं ,नहीं केशव भाई । हमारे कारण आप को जेल जाना पड़े ऐसा हम कभी नहीं चाहेंगे ।"

केशव भाई गंभीर होकर बोले, "लाला जी, मैं अपने गांव लौटना चाहता हूं । कई साल सरकारी नौकरी कर ली । आप लोगों से मैंने बहुत कुछ सीखा । आपने अपनी बंजर जमीन को एक बार फिर हरा-भरा बना दिया । धान की पैदावार दुगुनी कर दी । गांव में मेरी भी थोड़ी जमीन है । मैं उसे खेती के लिए तैयार करूंगा । उस पर खेती करूंगा ।... गांधीजी आजादी की लड़ाई लड़ रहे हैं । हम सबको उनका साथ देना है ।"...

लाला पटेल ने लंबी सांस ली और बोले, "कैसी लड़ाई केशव भाई ? न डंका, न तलवार-भाला । खून की एक बूंद नहीं । फिर भी लड़ाई ? यह कैसी लड़ाई है ?"

गांव में बात फैल गयी

'केशव भाई गांव छोड़कर जा रहे हैं। कुछ नौजवान और युवक मुखिया 'लायबरी' आ पहुंचे। एक युवक बोला,"हम आपको नहीं जाने देंगे, केशव भाई। हमारी 'लायबरी' का क्या होगा? इसे कौन चलायेगा?" एक बड़े-बुजुर्ग बोले, "आपने हमको कलम पकड़ना सिखाया। पढ़ना-लिखना सिखाया। अब हाथ छुड़ाकर जा रहे हो केशव भाई? लाला जी, आप इन्हें रोकिये। आपकी बात यह नहीं टालेंगे।"

केशव भाई ने सबको समझाया। उन्हें जाना ही पड़ेगा। सरकारी हुकुम आया है। वे बोले, "आप लोगों के साथ रहकर मैंने 'भूमि-पूजन' सीखा है। 'लायबरी' आकर आप 'सरस्वती-वंदना' करते हैं। खेतों में 'भूमि-पूजन' करते हैं। धान उगाते हैं और पढ़ना-लिखना भी सीखते हैं। लाला पटेल से मैंने खेती का हुनर सीखा है। मैं किसान बनकर खेती करूंगा। मुझे खुशी खुशी विदा कीजिए।"

केशव भाई की आंखों में आंसू भर आये। लोगों की आंखों में भी आंसू थे। सबने केशव भाई की बात सुनी। कुछ बोल न सके। 'राम-राम' किया और चुपचाप लौट गये।

गांव छोड़ने से पहले केशव भाई लाला पटेल से बोले, "लाला जी, 'लायबरी' की मुझे बड़ी चिंता है। सबने मिलकर इसे बनाया। यह गांव के प्राण के समान है। इसे कौन चलायेगा ? सरकार शायद इस पर ताला डाल देगी।"

'लायबरी' में जमा लोग परेशान थे। लाला पटेल का चेहरा उदास था। सभी सोच में डूबे थे। अब क्या होगा ?

अचानक लाला पटेल का चेहरा खिल उठा। वे अपनी धुन में बोले, "बाबू, यह लाला अभी जिंदा है। मरा नहीं है। 'लायबरी' मैं चलाऊंगा। हम सब मिलकर काम करेंगे। चंदा इकट्ठा करेंगे। साहुकारों से दान लेंगे। 'लायबरी' बंद नहीं होगी।" लाला पटेल की आंखों में आंसू थे। वे बोले, "केशव भाई, आपने हमें साक्षर बनाया है। सक्षम बनाया है। 'लायबरी' पहले की तरह ही चलेगी।"

वहां जमा सभी लोगों के मुंह से निकला, "हां, केशव भाई। लाला पटेल 'लायबरी' के ग्रंथपाल होंगे।" लाला जोश में आ गये और बोले, "आप चिंता न करें केशव भाई। 'लायबरी', 'चरखा' और 'खेत', ये हमारे गांव के मंदिर, मस्जिद, और गिरजाघर होंगे। बापू का सपना हम साकार करेंगे।"

लोगों में नया आत्म-विश्वास था। उनमें नयी ताकत थी। लाला पटेल और 'लायबरी' का साथ था। उन्होंने केशव भाई को जाने की मंजूरी दे दी।

लाला पटेल की 'लायबरी'

जाने से पहले केशव भाई ने लाला पटेल को 'लायबरी' का काम समझाया। 'लायबरी' का दफ्तर कैसे चलाना होगा। हिसाब-किताब कैसे रखना होगा। किताबों की देखभाल कैसे होगी। किताब लेन-देन का काम कैसे होगा। रजिस्टर में लिखने का तरीका भी उन्हें समझाया। वे लाला से बोले, "कुछ पढ़े-लिखे लड़के-लड़कियों को भी तैयार कर लेना, लाला जी। वे आपकी मदद करेंगे।"

और इस तरह लाला पटेल 'लायबरी' के किताब बाबू बन गये। वे किसान थे। अनपढ़ थे। 'लायबरी' में उन्होंने पढ़ना-लिखना सीखा। 'लायबरी' चलाने का तरीका सीखा। लोगों ने 'लायबरी' का नाम —"लाला पटेल की 'लायबरी' " रख दिया।

केशव भाई ने इस गांव में आकर खेती का हुनर सीखा। वे एक किसान बनकर अपने गांव लौटे।

लाला पटेल की 'लायबरी' चलती रही। उसने गांव को एक नया संदेश दिया। एक अनपढ़ किसान पढ़ना-लिखना सीखकर कोई भी बड़ा काम कर सकता है। साक्षर बन कर



कठिन से कठिन समस्या को सुलझा सकता है ।

देश आज़ाद हुआ । लाला पटेल के गांव ने उसमें हिस्सा लिया। ऐसे कई गांवों ने आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया। अहिंसा को अपना शस्त्र बनाकर लाला पटेल 'लायबरी' चलाते रहे ।

आजादी के बाद कई साल बीत गये। लाला पटेल की 'लायबरी' की महिमा को लोग आज भी याद करते हैं।

शिवम् ऑफसैट प्रेस, ए-12/1, नरायणा इंडिस्ट्रयल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली 110 028 द्वारा मुद्रित